कहीं लग न जाएं

धर्मराज की अदालत के गंभीर आरोप !

1. तुम पर आत्मिक दृष्टि रखने के बजाए दैहिक दृष्टि रखने का आरोप है।
2. पांच विकारों के अंश व वंश के वशीभूत होकर किए गए विकर्म करने का आरोप है।
3. समय को सफल नहीं करने, इधर-उधर की व्यर्थ बातों में गंवाने का आरोप है।
4. परचिन्तन, परदर्शन, परमत, प्रपंच में रहरक ब्राह्मण जीवन के महत्व को नहीं समझने का आरोप है।
5. दूसरों को सुख देने के बजाए दु:ख देने, कटु वचन बोलने, टोंट वाले बोलने का आरोप है।
6. समय होते हुए भी बाप को याद नहीं किया, सेवा नहीं करने का आरोप है।
7. दूसरों का कल्याण करने की बजाए उनका अकल्याण करने का गंभीर आरोप है।
8. ज्ञान का मनन-चिन्तन नहीं करने, मुरली नहीं सुनने का आरोप है।
9. बाप की याद के बिना ब्रह्मा भोजन ग्रहण करने का आरोप है।
10. ईश्वरीय मर्यादाओं से अनभिज्ञ होकर उनके अनुकूल नहीं चलने का आरोप है।
11. ईश्वरीय यज्ञ की विभिन्न चीजों की चोरी करने का आरोप है।
12. साधना का समय छोड़कर साधनों के वश होकर समय को बर्बाद करने का आरोप है।
13. रूहानी याद की यात्रा छोड़ घूमने-फिरने, मौज-मस्ती करने का आरोप है।
14. सर्व सम्बन्धों से एक बाप को याद नहीं करने का आरोप है।
15. स्वराज्य अधिकारी रहने की बजाय कर्मेन्द्रियों के अधीन रहने का आरोप है।
16. यज्ञ में दूसरों की उन्नति व पुरुषार्थ में बाधक बनने का आरोप है।
17. वायुमण्डल, वातावरण को मन्सा-वाचा-कर्मणा अशुद्ध बनाने का आरोप है।
18. जो सफल कर सकते थे वह सफल नहीं किया यह भी आरोप है।
19. दूसरों को बाप का परिचय नहीं देने व उन्हें बाप का नहीं बनाने का आरोप है।
20. बाप के वर्से से दूसरों को वंचित रखने व स्वयं भी वंचित रहने का आरोप है।
21. ईश्वरीय वरदानों को समय पर कार्यों में नहीं लगाने का आरोप है।
22. समय होते हुए भी विश्व को सकाश नहीं देने का आरोप है।
23. घर को गीता पाठशाला बना सकते थे, नहीं बनाने का आरोप है।
24. कुमारी ईश्वरीय सेवा में मददगार बन सकती थी लेकिन नहीं बनी, यह आरोप है।
25. ईश्वरीय खजाने प्राप्त करने के बाद भी सदा खुश नहीं रहने का आरोप है।
26. बार-बार माया के विभिन्न रूपों के अधीन होने का आरोप है।
27. स्वयं के व अन्य आत्माओं के पापों को याद के बल से भस्म नहीं करने का आरोप है।
28. सतटीचर द्वारा मिले होमवर्क को समय पर न करने का आरोप है।
29. स्वयं की स्थिति को शक्तिशाली व सम्पूर्ण निर्विकारी नहीं बनाने का गंभीर आरोप है।
30. ईश्वरीय वरदानों को कार्यों में नहीं लगाने का आरोप है।..... **आदि अनेक प्रकार के आरोपों से बचने के लिए अपने को चेक कर चेंज करना है। स्वयं ही साक्षी होकर स्वयं के ऊपर आरोप लगाकर स्वयं ही उनका निदान कर सकते हैं।**